# SUBJECT : SANSKRIT

# CHAPTER NO: 2

# CHAPTER NAME: BILASYABANI KADAPI ME NA SRUTA

# PPT-2

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

## द्वितीयः पाठः

# बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

## Expected Learning Outcome

सामान्य उद्येश्य : **(General Objective)**

१ . नैतिकज्ञानस्य वुद्धिः

२ . ‘वुद्धिःर्यस्य वलं तस्य‘ सम्बन्धित ज्ञानम्

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

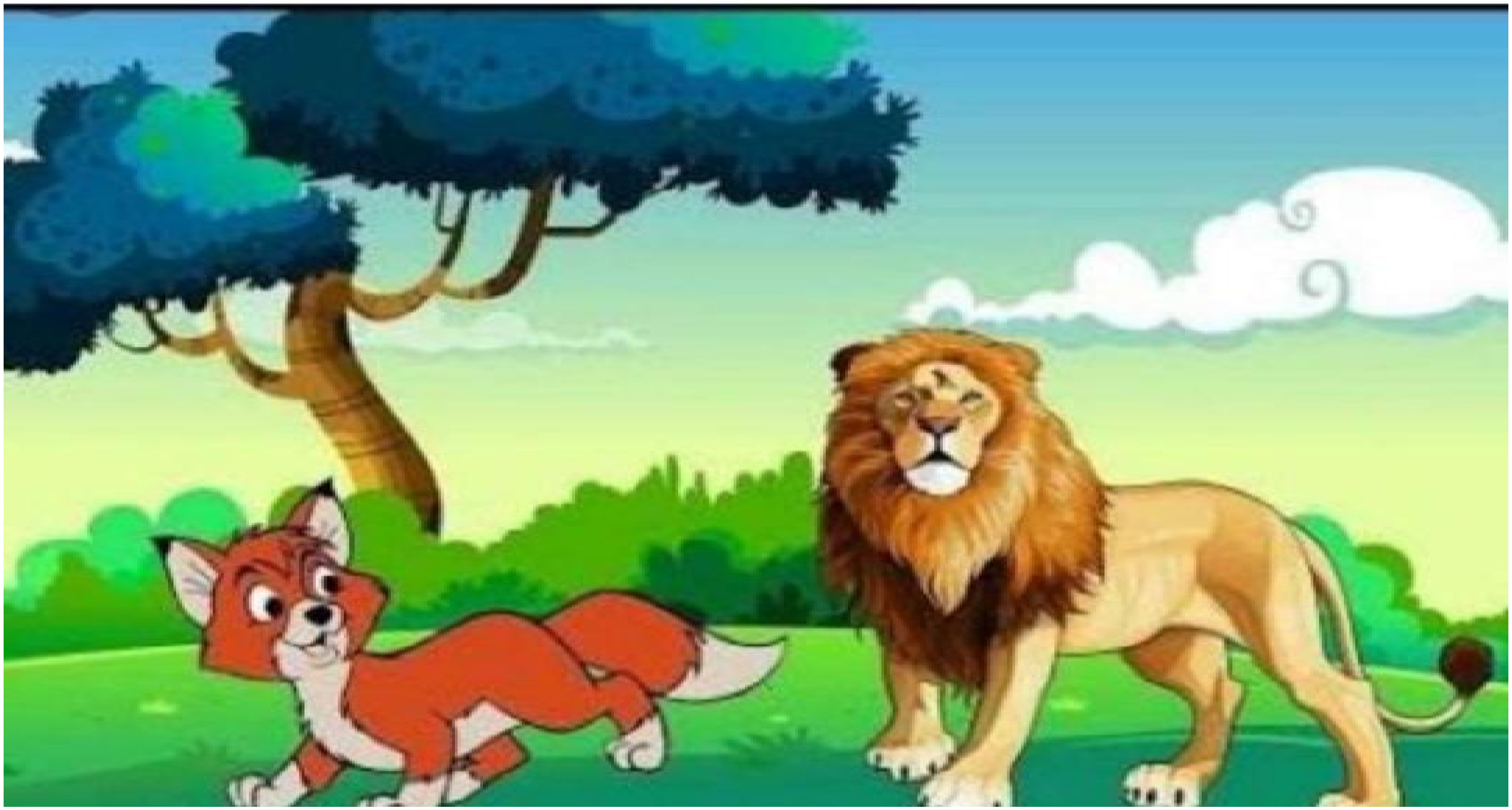

**पूर्वपाठस्य आलोचना -**

१ . विलस्यवाणी कदापि मे न श्रृता इति विषय: कस्मात् ग्रन्थात् आनीत: ?

२ . पञ्चतन्त्रस्य तृतीय तन्त्रस्य नाम किम् ?

३ . पञ्चतन्त्रस्य क: लेखक: ? अस्यपात्रगण: किदृश: ?

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत् । स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते , न च बहिरागता । शृगालः अचिन्तयत्- "अहो विनष्टो स्मि । नूनम् असि्मन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि । किं करवाणि?" एवं विचिन्त्य दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः- "भो विल! भो विल! किं न स्मरसि , यन्मया त्वया सह समयः कृतो स्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रतयागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? यदि त्वं मा न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति ।"

| शब्दार्थः | भावार्थः |
| --- | --- |
| अन्तरे | बीच में। |
| गुहायाः | गुफा का। |
| शृगालः | गीदड़। |
| समागच्छत् | आया। |
| यावत् | जब तक। |
| तावत् | तब तक। |
| सिंहपदपद्धतिः | शेर के पैरों के चिन्ह। |
| प्रविष्टा | अन्दर चली गई। |
| तर्कयामि | सोचता हूँ। |
| विचिन्त्य | सोचकर। |
| दूरस्थः | दूर खड़े हुए। |
| रवम् | शब्द, आवाश। |
| समयः | समझौता (शर्त)। |
| बाह्यतः | बाहर से। |
| प्रत्यागमिष्यामि | वापस आऊँगा। |
| आकारयिष्यसि | पुकारोगी। |
| यदि | अगर। |
| आह्वयसि | बुलाती हो। |
| तर्हि | तो। |
| द्वितीयम् | दूसरे। |
| यास्यामि | चला जाउँगा। |

अथ एतच्छ्रुत्वा सिहं अचिन्तयत्-"नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति ।
परंतु मद्भयात् न किञ्चित् वदति ।"
अथवा साध्विदम् उच्यते-
भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः ।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवते्।।

**अन्वय:** भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः वाणी च न प्रवर्तन्ते: वेपथुः च अधिक: भवेत्।

**सरलार्थ:** इसके बाद यह सुनकर शेर ने सोचा-"निश्चय से (ही) यह गुफा अपने मालिक का सदा आह्वान (पुकार) करती है। परन्तु (आज) मेरे डर से कुछ नहीं बोल रही है।"
अथवा ठीक ही यह कहते हैं- 'भय से डरे हुए मन वाले लोगों के हाथ और पैर से होने वाली क्रियाएँ ठीक तरह से नहीं होती हैं और वाणी भी ठीक काम नहीं करती; कम्पन (घबराहट) भी अध्कि होता है।'

| शब्दार्थ: | भावार्थ: |
|---|---|
| अथ | इसके बाद। |
| एतत् | यह। |
| श्रुत्वा | सुनकर। |
| अचिन्तयत् | सोचा। |
| नूनम् | निश्चय से (ही)। |
| गुहा | गुफा। |
| स्वामिनः | मालिक का। |
| समाह्वानम् | बुलाना (पुकार करना)। |
| मद्भयात् | मेरे डर से। |
| साधु | उचित (अच्छा)। |
| भयसन्त्रस्तमनसां | डरे हुए मन वालों का। |
| हस्तपादादिकाः | हाथ-पैर आदि से सम्बन्धित। |
| क्रियाः | काम। |
| प्रवर्तन्ते | प्रकट होते हैं। |
| वेपथु | कम्पन। |

## EXTRA QUESTIONS

१. श्वरनश्वर: कुत्र प्रतिवसति स्म ?

२. सिंहस्य नाम किम् ?

३. क: आहारं न प्राप्तवान् ?

४. कदा सा एकं महतीगुहां अपश्यत् ?

५. सिंह किम् अचिन्तयत् ?

६. शृगालस्य नाम किम् आसीत् ?

७. शृगाल: किम् अचिन्तयत् ?

८. सिंह:इति पदे का विभक्ति ?

९. क: दुरस्य: श्वं कर्त्तुम् आरब्ध: ?

१०. पञ्चतन्त्रम् केन रचित: ?

**सन्धि**

कस्मिश्चित

इतस्तत्र:

क्षुधात्त:

किञ्चिदपि

कोऽपि

समागमिष्यामि

थन्मया

**गृहकार्य -**

अनुच्छेदे स्थित पञ्च प्रश्नान्, पञ्चप्रकृति प्रत्यय: लिखत ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

# ODM EDUCATIONAL GROUP